कई शताब्दियों से सर्वधर्म समभाव का संदेश दे रही हैं उदयगिरि की गुफाएँ

दिनेश चंद्र वर्मा

इतिहासकारों एवं पुरातत्वशास्त्रियों के मतानुसार विदिशा के समीप स्थित उदयगिरि की जिन गुफाओं को भारतीय मंदिरों की जननी कहा जाता है, वे गुफाएँ कई शताब्दियों से सर्वधर्म समभाव का संदेश देती रही हैं।

इन गुफाओं का जब निर्माण हुआ था तब तीन धर्म अस्तित्व में थे- हिन्दू, जैन और बौद्ध। उदयगिरि की इन गुफाओं में इन तीनों ही धर्मों के आराधना स्थल हैं। यही नहीं हिन्दू धर्म में जितनी भी उपासना पद्धतियाँ हैं, उनके आराध्य देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ भी इन गुफाओं में मौजूद हैं। हिन्दू धर्म में जो उपासना पद्धतियाँ हैं- वे हैं आदित्य (भगवान सूर्य के उपासक), गणोक्त (भगवान गणेश के उपासक), शाक्त (शक्ति या दुर्गा के उपासक), शैव (भगवान शिव के उपासक), वैष्णव (भगवान विष्णु के उपासक) तथा स्मार्त (उपरोक्त सभी के उपासक)। अब इन उपासना पद्धतियों का उदयगिरि से संबंध देखिए। उदयगिरि की गुफाओं में हिन्दू धर्म से संबंधित देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ तो हैं ही, गुफा क्रमांक बीस में भगवान पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। गुफा क्रमांक एक में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा है। उदयगिरि की पहाड़ियों के ऊपरी हिस्से पर जनरल कनिंघम का अशोक कालीन बौद्ध स्तम्भ मिला था। इसी प्रकार पुरातत्वशास्त्री डॉ. भंडारकर को एक बौद्ध स्तूप के अवशेष मिले थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि उदयगिरि हिन्दू, जैन एवं बौद्ध तीनों ही धर्मों के आस्था का केन्द्र था।

अब हिन्दू धर्म की उपासना पद्धतियों के उदयगिरि से संबंध की बानगी देखिए। गुफा क्रमांक एक में भगवान सूर्य का चित्र उत्कीर्ण है। उदयगिरि में दिगम्बर गणेश की एक प्रतिमा उत्कीर्ण है, जो इतनी दुर्लभ है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इसका एक "गिफ्ट कार्ड" जारी किया था। गुफा क्रमांक 6 में महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा है। यह प्रतिमा दुर्गा जी की प्राचीनतम प्रतिमाओं में मानी जाती है। गुफा क्रमांक 19 में एकमुखी शिवलिंग है। गुफा क्रमांक 4 में भी एकमुखी शिवलिंग है। गुफा क्रमांक 3 में शिव के पुत्र भगवान कार्तिकेय की प्रतिमा है। गुफा क्रमांक 5 में भगवान विष्णु के वराह अवतार की विख्यात प्रतिमा है। गुफा क्रमांक 9, 10, 11, 12 में विष्णु प्रतिमाएँ हैं। शेषशायी भगवान विष्णु की एक विशाल प्रतिमा भी उदयगिरि की गुफाओं में है। इस प्रकार सभी उपासना पद्धतियों के देवी-देवता उदयगिरि में विराजमान हैं।

उदयगिरि की ये गुफाएँ विदिशा नगर से केवल 6 किलोमीटर दूर पश्चिम में स्थित हैं। इन गुफाओं तक पहुंचने के लिए बेतवा अथवा बेस नदी को पार करना होता है। विश्वविख्यात बौद्ध तीर्थ साँची से इनकी दूरी 6 किलोमीटर उत्तर पूर्व में है। यह पहाड़ी बेसनगर से सिर्फ दो किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। उदयगिरि की यह पहाड़ी बेसनगर एवं प्राचीन विदिशा के लिए सुरक्षा दीवार का काम करती थी। बेसनगर या प्राचीन विदिशा तीन ओर से बेतवा एवं बेस नदियों से घिरा हुआ था,चौथी दिशा में उदयगिरि की पहाड़ी स्थित थी। इस प्रकार यह नगर बिना किले या दुर्ग के भी अन्य नगरों की तुलना में सुरक्षित था।

उदयगिरि की पहाड़ी की लंबाई डेढ़ मील है। यह दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर फैली हुई है। इसकी अधिकतम ऊँचाई 350 फुट है। विख्यात पुरातत्वशास्त्री जनरल कनिंघम ने इन गुफाओं के उत्खनन का काम उत्तर पूर्व की ओर से शुरू किया था।

इस पहाड़ी का नाम उदयगिरि क्यों पड़ा और कब पड़ा, इसका कोई उल्लेख आज तक नहीं मिल पाया है। बौद्ध साहित्य में विदिशा के समीप वेदिसगिरी नामक एक पहाड़ी स्थित होने का उल्लेख मिलता है। इस बात के भी स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं कि सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र श्रीलंका जाने के पूर्व अपनी माँ संघमित्रा से मिलने आये थे और वे वेदिसगिरि पहाड़ी पर स्थित विहार में ठहरे थे। यहाँ मैं इस तथ्य का उल्लेख करना चाहूँगा कि महेन्द्र और संघमित्रा की माता, देवी श्री या संघमित्रा विदिशा की एक श्रेष्ठि कन्या थी और जब अशोक मालवा के शासक नियुक्त किये गये थे तो उन्होंने इस श्रेष्ठि कन्या से विवाह किया था।

जनरल कनिंघम ने जब इस पहाड़ी पर उत्खनन कराया तो उन्हें एक बौद्ध स्तूप के अवशेष मिले थे। इसलिए यह कहा जा सकता है कि विदिशा के समीप उदयगिरि की पहाड़ी उस समय वेदिसगिरि के नाम से प्रसिद्ध थी।

परमार वंश, जिसमें मुंज एवं भोज सरीखे प्रतापी सम्राट हुए थे, उसी वंश के एक राजा उदयादित्य ने विदिशा पर शासन किया था। इस राजा ने उदयपुर बस्ती बसायी। उदयपुर के सुन्दर मंदिर का निर्माण कराया तथा उदय समुद्र नामक एक तालाब भी बनवाया था।

इन्हीं राजा उदयादित्य ने विदिशा में भी कुछ निर्माण कार्य कराये थे। विदिशा के बहुचर्चित विजया मंदिर में मिले एक शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि विजया मंदिर का निर्माण भी राजा उदयादित्य ने कराया था। संभवतः इन्हीं राजा उदयादित्य के नाम पर इस पहाड़ी का नामकरण हो गया है, जिस प्रकार उदयपुर, उदयेश्वर मंदिर एवं उदय समुद्र का नामकरण उनके नाम पर हुआ था। राजा उदयादित्य ने ग्यारहवीं शताब्दी में विदिशा पर शासन किया था। उनके बाद से ही विदिशा की अवनति का दौर शुरू हुआ। विदिशा गुमनामी के अंधेरे में डूबता गया और इसके साथ ही उदयगिरि की ये गुफाएँ गुमनामी के अंधकार में डूब गयीं।

लगभग सात सौ वर्ष बाद गुमनामी का यह अंधकार उस समय दूर हुआ जब जनरल कनिंघम ने इस पहाड़ी पर उत्खनन कार्य किया एवं मिट्टी तथा पेड़ों से ढँकी इन गुफाओं को खोज निकाला। सन् 1874-75 में उनकी जो 'आर्कलाजिकल सर्वे रिपोर्ट' प्रकाशित हुई उसमें इन गुफाओं का विस्तार से वर्णन था। जनरल कनिंघम की इस रिपोर्ट में इस पहाड़ी की 19 गुफाओं का उल्लेख था। बाद में ग्वालियर के सिंधिया वंश के शासकों के कार्यकाल में तत्कालीन पुरातत्व विभाग ने एक और गुफा खोजी। इस प्रकार पुरातत्व विभाग के तत्कालीन कागजातों में यह विवरण पढ़ने को मिलता है कि इस पहाड़ी में बीस गुफाएँ हैं। वैसे इस पहाड़ी में चौबीस गुफाएँ हैं।

इन गुफाओं का निर्माण-काल गुप्तकाल माना जाता है। विभिन्न गुफाओं में प्राप्त शिलालेख एवं प्रतिमाओं की निर्माण शैली भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। गुफा क्रमांक 1 एवं बीस जैन धर्म से संबंधित गुफाएँ कही जाती हैं, शेष गुफाएँ हिन्दू धर्म से संबंधित हैं।

इन गुफाओं में शिल्पशास्त्र की दृष्टि से गुफा क्रमांक एक को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह गुफा भारत के मंदिर निर्माण

शास्त्र के विकास के प्रारंभिक रूप का प्रतिनिधित्व करती है। इस गुफा को एक पत्थर को तीन ओर से उत्कीर्ण करके बनाया गया है, छत भी उसी पत्थर की बनी हुई है। गुफा के सामने की दीवार पर सूर्य का एक चित्र है, इसलिए इसे 'सूरज गुफा' भी कहा जाता है। गुफा में जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की एक खड्गासन प्रतिमा है। गुफा के सामने वर्गाकार प्रवेश मंडप है जो तीन ओर से खुला है। प्रवेश मंडप में स्तंभ लगे हुए हैं। इसी गुफा से लगी एक खाली गुफा भी है। गुफा क्रमांक 2 एक तलघर के समान है। इसमें कोई प्रतिमा नहीं है। इस गुफा के सामने पहले एक दीवाल थी जो अब नष्ट हो गयी है।

गुफा क्रमांक 3 एक आयताकार गुफा है। इसकी भीतरी दीवालें खुरदरी हैं। भीतरी दीवाल पर एक प्रतिमा उत्कीर्ण है। यह प्रतिमा भगवान शंकर के पुत्र कार्तिकेय की है। यह प्रतिमा अब अस्पष्ट एवं खंडित है। प्रतिमा में दो हाथ एवं एक मस्तक दिखाया गया है। प्रतिमा दायें हाथ में दंड धारण किये हुए है, जबकि बायाँ हाथ खंडित है।

गुफा क्रमांक 4 का नामकरण जनरल कनिंघम ने 'वीणा गुफा' के नाम से किया है। इस गुफा के द्वार पर एक पुरुष आकृति को वीणा बजाते हुए उत्कीर्ण किया गया है। वैसे द्वार पर सारंगी एवं मृदंग के वादक भी उत्कीर्ण हैं। इस गुफा में एकमुखी शिवलिंग स्थापित है, जो 2 फुट 5 इंच ऊँचा है। इसका व्यास एक फुट 2 इंच है। लिंग पर भगवान शिव की आकर्षक मुखाकृति गोलाकार स्वरूप में उत्कीर्ण है। इस मुखाकृर्ति में केश सज्जा पर विशेष परिश्रम किया गया है। भगवान शंकर का तीसरा नेत्र मस्तक के बीचोंबीच में है। भगवान शंकर के गले में सर्प के स्थान पर हार है।

उदयगिरि की गुफा क्रमांक 5 सर्वाधिक चर्चित, प्रसिद्ध एवं विख्यात है। यह एक खुली गुफा है जो 22 फुट लम्बी तथा धरातल से 12 फुट 8 इंच ऊँची है। इस गुफा में पुराण-प्रसिद्ध वराह अवतार को भव्य, विशाल एवं कलात्मक रूप से चित्रित किया गया है।

इस गुफा में भगवान वराह की जो विशाल प्रतिमा है, वह अपने बाएँ पैर को शेषनाग पर रखे हुए है। शेषनाग के तेरह फन हैं, जिनमें 7 फन आगे हैं एवं 6 पीछे हैं। भगवान वराह के गले में पुष्पों का विशाल हार है।

उदयगिरि की इस प्रतिमा में भगवान वराह पृथ्वी को अपने दाहिने दाँत पर धारण किये हुए हैं। पृथ्वी को नारी-रूप में उत्कीर्ण किया गया है। प्रतिमा के पार्श्व में टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियाँ द्वारा समुद्र की लहरें अंकित की गयी है और इस प्रकार भगवान विष्णु द्वारा वराह का अवतार लेकर प्रलय में सृष्टि रचना की पौराणिक कथा चित्रित की गयी है। प्रतिमा के पार्श्व के ऊपरी भाग में देवता एवं राक्षस उत्कीर्ण किये गये हैं जो इस महान विस्मयकारी दृश्य को देख रहे हैं। प्रतिमा की बायीं ओर गंगा तथा दायीं ओर यमुना नदी का स्वर्ग से अवतरण उत्कीर्ण किया गया है, जिसमें वे स्वर्ग की अप्सराओं के साथ समुद्र की ओर जा रही हैं। दोनों नदियों की प्रतिमा भगवान वराह के अभिवादन और अभिनंदन में कलश धारण किये हुये हैं। समुद्र के देवता वरुण को भी चित्रित किया गया है, जो अभिवादन की मुद्रा में है।

वराह अवतार की यह प्रतिमा गुप्तकालीन मूर्तिकला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। कुछ पुरातत्व शास्त्रियों का यह मत है कि वराह अवतार का यह चित्रण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य को भगवान विष्णु के समतुल्य बताने के लिये किया गया है। उदयगिरि की अनेक गुफाओं का निर्माण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन काल में हुआ था , इसका प्रमाण कुछ अन्य गुफाओं के शिलालेख से मिलता है। वराह गुफा के समीप गुफा क्रमांक 6 में ही एक शिलालेख है जिसमें महाराधिराज चंद्रगुप्त के शासनकाल में संवत्सर 82 के आषाढ़ मास की शुक्ल एकादशी को महाराजा छागलिक के पौत्र महाराज विष्णुदत्त के पुत्र सनकादिक के दान का उल्लेख किया गया है। गुफा क्रमांक 6 सनकादिक गुफा कहलाती है। इस गुफा में एक थोड़ा-सा ऊँचा चबूतरा है, जिस पर पहले शिवलिंग स्थापित था। गुफा के सामने 24 फुट लंबा एवं 6 फुट चौड़ा प्रवेश मंडप है। यह गुफा 14 फुट लंबी एवं 12 फुट चौड़ी है। गुफा का प्रवेश द्वार, प्रवेश मंडप से थोड़ा हटकर दक्षिण में है। प्रवेश द्वार कलात्मक रूप से अलंकृत है। द्वार पर दोनों ओर पाँच प्रतिमाएँ हैं। दो द्वारपालों तथा गंगा एवं यमुना की प्रतिमाएँ भी द्वार पर अंकित हैं। दायीं ओर वाली प्रतिमाओं में भगवान विष्णु, महिषासुरमर्दिनी एवं द्वारपाल की प्रतिमाएँ हैं।

विष्णु प्रतिमा की चार भुजाएँ हैं एवं वे सुदर्शन चक्र धारण किये हुए हैं। महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा खंडित है फिर भी उसमें बारह भुजाएँ दिखती हैं। इन भुजाओं को ढाल-तलवार एवं त्रिशूल धारण किये हुए बताया गया है। गुप्तकाल में दुर्गा उपासना प्रारंभ होने का प्रमाण हमें इस प्रतिमा से मिलता है।

गुफा के प्रवेश मंडप की दक्षिणी दीवाल पर गणेशजी की एक दिगंबर प्रतिमा है। प्रतिमा कोई वस्त्र या आभूषण धारण किये हुए नहीं है। उदयगिरि की इस गणेश की प्रतिमा में गुप्तांग भी उत्कीर्ण हैं। शायद इस प्रकार की अन्य कोई प्रतिमा अभी तक प्राप्त नहीं हुई है। कुछ पुरातत्वशास्त्री उदयगिरि की इस गणेश प्रतिमा की भारत की सर्वाधिक प्राचीन गणेश प्रतिमाओं में गणना करते हैं। उत्तर भारत में निर्विवाद रूप से यही गणेश प्रतिमा सर्वाधिक प्राचीन है।

गुफा क्रमांक 6 की छत भी अलंकृत है। इस गुफा के समीप ही एक अन्य खुली गुफा है जो 9 फुट लंबी एवं 3 फुट चौड़ी है। इस खुली गुफा में अष्टमातृका की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

'तवा गुफा' के नाम से प्रसिद्ध गुफा क्रमांक 7 का आकार ऐसा है, जैसे किसी चूल्हे पर रोटी बनाने के लिये तवा रख दिया

गया हो। इस गुफा में शिवलिंग स्थापित था, जिसका अब कोई पता नहीं है। गुफा की छत पर एक कमल का फूल उत्कीर्ण है, जिसका व्यास 4 फुट 6 इंच है। इस गुफा का निर्माण चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के संधिविग्रह मंत्री वीरसेन ने कराया था जैसा कि इस गुफा में मिले एक शिलालेख से प्रकट होता है।

गुफा क्रमांक 8 से 12 तक की गुफाएँ सादी गुफाएँ हैं। गुफा क्रमांक 9, 10, 11 एवं 12 में विष्णु प्रतिमाएँ स्थापित हैं जो अब लगभग खंडित अवस्था में हैं। ये सभी गुफाएँ छोटी-छोटी हैं। गुफा क्रमांक 12 के द्वार पर द्वारपालों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

गुफा क्रमांक 13, वराह अवतार की गुफा क्रमांक 5 के समान ही खुली गुफा है तथा आकर्षक एवं कलात्मक है। इस गुफा में शेषशायी भगवान विष्णु की 12 फुट लंबी प्रतिमा है। भगवान विष्णु के मस्तक का ऊपरी भाग अब खंडित हो गया है। इस गुफा में भगवान विष्णु विशालकाय शेषनाग पर शयन कर रहे हैं। उनकी चार भुजाएँ हैं। एक भुजा पर उनका मस्तक टिका हुआ है। पास में गरुड़ की आकृति उत्कीर्ण है। भगवान विष्णु गले में पुष्पहार एवं रत्नजड़ित हार धारण किये हुए हैं। प्रतिमा की बायीं ओर एक कमल की अस्पष्ट आकृति है, जिसमें ब्रह्मा आसीन से दिखते हैं। लक्ष्मी तथा अन्य देवताओं की आकृतियाँ भी उत्कीर्ण हैं। गणेशजी की भी एक प्रतिमा उत्कीर्ण है, पर वह दिगंबर नहीं है।

गुफा क्रमांक 14,15 एवं 16 भी सादी गुफाएँ हैं। इनमें कोई प्रतिमा नहीं है। गुफा क्रमांक 16 के बीच में एक चट्टान को काटकर चबूतरा बनाया गया है। संभवतः उस पर शिवलिंग स्थापित रहा होगा।

गुफा क्रमांक 17 में भी इसी प्रकार का एक चबूतरा है। कनिंघम ने इसे गुफा क्रमांक 8 बताया है। इस गुफा का द्वार कलात्मक एवं अलंकृत है। द्वार के दोनों ओर

द्वारपालों की प्रतिमाएँ हैं। द्वार के दायीं ओर गणेश की एवं बायीं ओर महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमाएँ हैं।

गुफा क्रमांक 18 आयताकार है। इसमें कोई प्रतिमा नहीं है।

गुफा 19 का नामकरण जनरल कनिंघम ने ' अमृत गुफा' किया था। इस गुफा के द्वार के ऊपर अमृत मंथन की पौराणिक गाथा चित्रित है। यह गुफा 22 फुट लंबी एवं 20 फुट चौड़ी है। गुफा के भीतर छत को सहारा देने के लिए पत्थर के 4 विशाल स्तंभ हैं। ये स्तंभ 8 फुट ऊंचे तथा अलंकृत हैं। स्तंभों पर पशुओं की आकृति बनी हुई है।

इस गुफा का द्वार बहुत कलात्मक है। द्वार पर उड़ते हुए गण, अश्वारोही पुरुष,नव ग्रह एवं द्वारपाल चित्रित किये गये हैं। गुफा के भीतर एक मुखी शिवलिंग स्थापित है। इस गुफा के बाहर कभी प्रवेश मंडप भी था, जिसके कलात्मक स्तंभ आज भी मौजूद हैं।

गुफा क्रमांक 20 जैन गुफा है। यह विशालकाय गुफा पांच हिस्सों में विभाजित है। यह गुफा शिल्पकला की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण है ही विदिशा में जैन धर्म के चरमोत्कर्ष का भी प्रमाण है। इस गुफा के एक कक्ष में 4 फुट 2 इंच ऊंचे एक शिला-फलक पर भगवान पार्श्वनाथ की भूरे वर्ण की पद्मासन प्रतिमा प्रतिष्ठित है। यह प्रतिमा दसवीं शताब्दी में निर्मित की गयी थी। मस्तक के ऊपर सप्त फणावली (सर्प) है। उसके ऊपर छत्र एवं दुदभिंका है। प्रतिमा के दोनों पार्श्वों पर विभिन्न वाद्ययंत्र लिये गंधर्वों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

गुफा के दूसरे कक्ष की दीवार में दो पद्मानासीन पार्श्वनाथ-प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। सामने की दीवार में भगवान आदिनाथ की पद्मासन प्रतिमा उत्कीर्ण है। इस प्रतिमा के पास भगवान शीतलनाथ के चरण उत्कीर्ण हैं। इस गुफा में एक शिलालेख भी है।

सभी छायाचित्र : धीरेश मौर्य

जनरल कनिंघम ने जब उत्खनन कार्य किया तो उसे इस पहाड़ी के ऊपरी हिस्से पर कई भवनों के अवशेष मिले। उसे एक अशोक कालीन बौद्ध स्तंभ मिला, जो खंडित था। इस स्तंभ का शीर्ष भाग बाद में ग्वालियर के संग्रहालय में ले जाया गया। जनरल कनिंघम के बाद पुरातत्वशास्त्री श्री भंडारकर ने नवंबर 1913 से फरवरी 1914 तक इस पहाड़ी पर उत्खनन कार्य कराया। इस उत्खनन में उन्हें 118 फुट लंबा एवं 70 फुट चौड़ा एक चबूतरा मिला। भंडारकर का अनुमान है कि इस चबूतरे पर एक विशाल मंदिर था। इस चबूतरे के उत्तर एवं दक्षिण में लघुमंदिरों के अवशेष मिले हैं। उनका यह भी अनुमान है कि किसी आक्रांता ने इन मंदिरों को पूरी तरह ध्वस्त किया था। भंडारकर ने जिस चबूतरे की खोज की उसी के पूर्व में बौद्ध स्तूप के अवशेष मिले थे। इस स्तूप का व्यास 16 फुट 8 इंच था। उदयगिरि की पहाड़ी के आसपास अनेक हिन्दू, जैन एवं बौद्ध अवशेष बिखरे पड़े हैं। इस पहाड़ी के पीछे एक विशाल शिला पर नरसिंह अवतार चित्रित किया गया है। साँची, विदिशा और बेसनगर पुरातत्व अवशेषों के अथाह सागर हैं, जहाँ जितनी खोज की जाय कम है। (विभूति फीचर्स)

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)